A Second Hand Life

Theme: E-waste

English | *Director:* Nutan Manmohan

00:30:00 | **Public Service Broadcasting Trust (PSBT)**

SYNOPSIS

The hammer in little hands beats away incessantly, beating out copper, gold, wires, switches from old electronic waste and also beating out the lives in these little hearts. This is electronic waste, dumped into India by developing countries, which do not want the toxic waste to pollute their rivers and soil and enter their bodies. For them developing countries are the best dustbins. Tonnes and tones of e-waste enter India ever year, poisoning our people. The film investigates the murky side of information technology, through the experiences of two children, one who works on such waste, the other, more privileged who dreams of creating a non-toxic computer, one day.

ए सेकेण्ड हैंड लाईफ़

विषयः ई–वेस्ट (इलेक्ट्रॉनिक कचरा)

हिन्दी | निदेशकः नूतन मनमोहन

00:30:00 | पब्लिक सर्विस ब्रॉडकास्टिंग ट्रस्ट

कथासार

ये नन्हें हाथ तांबा, सोना, तार और पुराने इलेक्ट्रॉनिक कबाड़ से निकले स्विचों पर लगातार हथौड़ा चलाते रहते हैं, पर कहीं न कहीं, इन हथौड़ों की चोट इनके कलेजों पर भी पड़ रही है। यह इलेक्ट्रॉनिक कचरा है इसका विकसित देश भारत में ढ़ेर लगा रहे हैं, वे नहीं चाहते कि इस ज़हरीले कचरे से उनकी अपनी नदियां और मिट्टी प्रदूषित हों और यह ज़हर उनके अपने लोगों के शरीर में पहुंचे। उनके लिए विकासशील देश सबसे बढ़िया कचरे के डिब्बे हैं। हज़ारों टन ई–कचरा हर वर्ष भारत पहुंचता है और हमारे लोगों के शरीर में ज़हर घोलता है। यह फ़िल्म संचार–तक़नीक के ख़तरनाक पक्षों की पड़ताल करती है। ऐसे दो बच्चों के अनुभवों के ज़रिए, जिनमें एक ऐसे ही इलेक्ट्रॉनिक कचरे पर काम करता है। दूसरा बच्चा, सुविधा–सम्पन्न है, उसका सपना है कि एक दिन वह ऐसा कम्प्यूटर बनाएगा, जिससे कोई जहरीला इलेक्ट्रॉनिक कचरा नहीं निकलेगा।